Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ-1 'संस्कार और भावना' (एकांकी) लेखक - विष्णु प्रभाकर

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या- पाँच पर दिए पाठ-1 'संस्कार और भावना' के शेष भाग को पढ़ेंगे।

बच्चो! पिछले सप्ताह हमने पढ़ा था कि माँ के बड़े बेटे अविनाश ने विजातीय लड़की से विवाह कर लिया इसलिए माँ ने उससे कोई संबंध नहीं रखा था। माँ की हालत देखकर छोटी बहू उमा को दुःख होता था। इसलिए एक बार वह बड़ी बहू के घर उसको समझाने गई कि माँ के लिए वह अपने पति को छोड़ सकती है? जब वह अपने पति को नहीं छोड़ सकती तो वह भी उन्हें नहीं छोड़ सकती। माँ को यह भी पता चलता है कि उनका छोटा बेटा अतुल भी कभी-कभी बड़े भाई के घर जाता रहता है। उन्हें इस बात से धक्का लगता है कि उमा बहू भी बड़ी बहू से मिलती रहती है और अतुल भी मिलता रहता है किन्तु वे अपने संस्कारों से बँधी हैं इसलिए वहाँ नहीं जा सकतीं। वे मन ही मन सोचती है कि काश मैं संस्कारों की दासता से मुक्त हो पाती। संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है। उन्हें अन्दर ही अन्दर इस बात का दुःख होता है कि अतुल भी बड़े भाई से मिलने गया था किन्तु उसने माँ को बताना उचित

नहीं समझा। केवल मैं (माँ) अपने संस्कारों की दासता से मुक्त नहीं हो पाती। माँ को यह महसूस होता है कि रक्त का खिंचाव बहुत प्रभावशाली होता है, वह अपनों को खींच ही लेता है।

बच्चो! अब एकांकी को आगे बढ़ाते हुए पृष्ठ संख्या बारह से पढ़ना आरंभ करते हैं। माँ के बड़े बेटे अविनाश ने दूसरी जाति की लड़की से विवाह कर लिया तो वह उसे अपना नहीं सकी। उसे डर था कि कुल, जाति और धर्म के लोग क्या कहेंगे। वह उनको मुँह दिखाने के काबिल नहीं रह जाएगी। यही कारण था कि उसने (माँ ने) अपनी बहू को स्वीकार नहीं किया और बड़े-बेटे को अर्थात् अविनाश तथा उसकी पत्नी को घर से अलग रहना पड़ा। साथ रह रहे छोटे बेटे-बहू अर्थात् अतुल एवं उमा की भी निकटता न प्राप्त हो सकी।

अविनाश ने माँ की मर्ज़ी के खिलाफ़ एक दूसरी जाति की बंगाली लड़की से विवाह किया था। माँ ने इस विवाह को न करने के लिए अपने प्रेम की दुहाई दी, किन्तु अविनाश अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। इसी बात पर उसने (अविनाश ने) कहा कि यदि माँ संतान का पालन-पोषण करती है तो यह उनकी नैतिक ज़िम्मेदारी है। यह उनका कोई एहसान नहीं। संतान उत्पन्न करके, उनका पालन पोषण करके माँ-बाप राष्ट्र का ऋण चुकाते हैं और उन्होंने अब संतान को पाल-पोसकर बड़ा कर दिया तो वे ऋण से मुक्त हो गए हैं। अब उन्हें परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।

लेकिन माँ अविनाश की इस बात से सहमत नहीं थी क्योंकि वह मानती थी कि उन्होंने जिस सन्तान को उत्पन्न किया है अथवा पाल-पोसकर बड़ा किया है इसलिए अपनी संतान पर उनका अधिकार है। माँ अपनी संतान को प्रेम करती है। अतः सन्तान को माँ की इच्छा के विरुद्ध कोई काम नहीं करना

चाहिए। अविनाश ने भी उनकी इच्छा के विरुद्ध विवाह करके उनका दिल दुखाया था। माँ ने अपने प्रेम की दुहाई देकर उस पर अपना अधिकार रखना चाहा। वह चाहती थी कि अविनाश उनकी मर्जी के अनुसार ही सारे काम करे। माँ चाहती थी कि अविनाश की बहू अविनाश को छोड़कर चली जाए ताकि वह अपने बेटे को फिर से प्राप्त कर सके। बेटे के अलग रहने से वह बहुत दुःखी थी किन्तु बहू को वह अपना नहीं सकती थी इसलिए बहू के रहते वह अपने बेटे को अपने पास भी नहीं बुला सकती थी। उमा माँ की बातों से सहमत होती है। तभी अतुल का प्रवेश होता है।

अतुल साँवले रंग का, गंभीर एवं कोमल स्वभाव का युवक है। अतुल के आते ही उमा रसोई में चली जाती है। अतुल कुर्सी पर बैठ जाता है। माँ अतुल को अविनाश से मिलने के बारे में पूछती है कि क्या तूने सुना है कि अविनाश बहुत बीमार था। अतुल माँ की यह बात सुनकर उन्हें बताता है कि बड़े भैया को हैजा हो गया था। माँ उससे पूछती है कि तुमने मुझे बताया तक नहीं। अतुल अविनाश से मिलने की बात स्वीकार करते हुए माँ के रूढ़िग्रस्त संस्कारों पर कटाक्ष करता है। अतुल जानता है कि माँ रूढ़िवादी संस्कारों से बँधी हुई है और वे एक विजातीय एवं नीच श्रेणी की लड़की को अपनी बहू स्वीकार नहीं करेंगी।

ममत्व का भाव जातीय या धार्मिक बंधनों के बाँधे नहीं रुकता अपितु वह तो अबोध रूप से सभी पर ममता लुटाती है जब तक वह (माँ) अविनाश की पत्नी को स्वीकार नहीं कर लेती, तब तक उनका प्रेम या ममत्व की बातें करना बेकार है। यही कारण है कि अतुल ने माँ से कहा कि प्रेम और ममता की दुहाई देना व्यर्थ है। अतुल ने अपनी माँ

को निर्मम कहा क्योंकि एक माँ अपने बेटे से केवल विजातीय लड़की से विवाह करने के कारण संबंध तोड़ ले एवं उनके रूढ़िग्रस्त संस्कार उनके बेटे से अधिक महत्त्वपूर्ण हों, तो वह निर्मम नहीं तो क्या है? अतुल के अनुसार जब तक माँ अविनाश की बहू को स्वीकार नहीं कर सकती, उसके घर नहीं जा सकती, तो इस प्रकार चिंतित होना व्यर्थ है।

अतुल ने अपनी माँ को निर्मम के साथ कायर भी कहा क्योंकि उनमें उन संस्कारों को तोड़ने का साहस नहीं था। अतुल के अनुसार माँ के रूढ़िवादी संस्कार उन्हें खुले दिमाग से सोचने की अनुमति ही नहीं देते थे। वे इन संस्कारों से बढ़कर अधिक कुछ नहीं सोच सकती थी न उनमें साहस था कि वे बहू-बेटे को अपना ले और समाज की चिन्ता न करे।

उमा हाथ में चाय की ट्रे लेकर प्रवेश करती है। उमा अतुल से पूछती है कि आप बीमारी में अपने भाई के पास क्यों नहीं गए तो अतुल ने बताया कि तुम भाई साहब को नहीं जानती। वे मेरे मैजे डॉक्टर से भी इलाज नहीं करवाना चाहते तब जाने का क्या लाभ है। अतुल ने उमा को बताया कि मैंने माँ को इसलिए नहीं बताया कि उनमें अपने रूढ़िवादी संस्कारों से मुक्त होने का साहस नहीं है। वे निर्मम ही नहीं कायर भी हैं। अतः यह जानकर भी माँ वहाँ न जा पाती। ऐसा कहकर अतुल उठता है तथा अपने नौकर रामसिंह से पानी लाने के लिए कहता है।

बच्चो! आज हम अपनी इस एकांकी को यहीं समाप्त करते हैं। सभी छात्र इस पाठ को पृष्ठ संख्या तेरह तक पढ़ेंगे एवं समझने का प्रयास भी करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"माया - ममता किसी को भी नहीं छू गई है। हर बात में देश, धर्म और कर्त्तव्य की दुहाई देना उन्होंने सीखा है। आखिर इनका बाप भी तो ऐसा ही निर्मम था।"

(क) वक्ता कौन है ? 'उन्होंने' शब्द का प्रयोग किनके लिए किया गया है ?

(ख) 'इनका बाप भी तो ऐसा ही निर्मम था' — वक्ता को उसके निर्ममता के संबंध में कौन-सी घटना याद आ गई ?

(ग) वक्ता के बेटों ने उसे किस बात के लिए कोसा है और क्यों ?

(घ) माँ का हृदय परिवर्तन कब हुआ और कैसे ?

धन्यवाद ।

[अंतिम पृष्ठ]